

9E



[illegible]

हं दवानामूग मर्यानां । गार्ह्यामिदं वि श्वधत्ता प्रदियदंतनायिर्ममात
नव ॥ **म** ॥ १०० दवि यजननंभ ससुदविद १०० सवर्गन १०० स्व स
थ । आबममनियजासति यशुगनिप्रो कर्त्त नारुयसनि । अमियु
जावदुनामिक प्रा वनयथापना अस्मा शुदह ॥ **४८** ॥ उ उ दी मता म
वनउय ना ग उ म धमा ४ यितन ४ सा म्या स । अशु **५०** ॥ य व वृका
सतसा कृतावपुयितना हवय ॥ **५१** ॥ अंगिवसान ४ यितना नवम

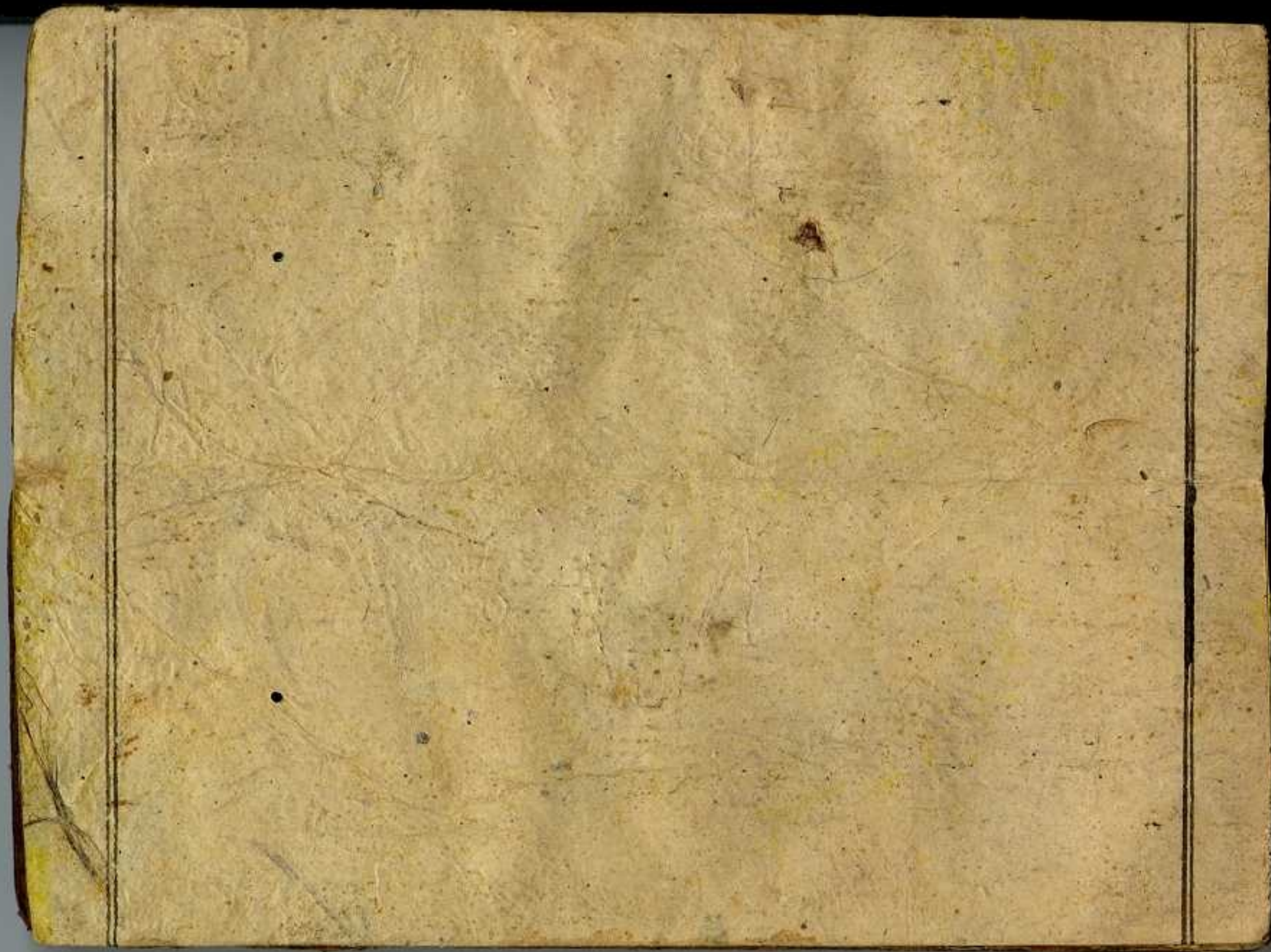
[illegible]

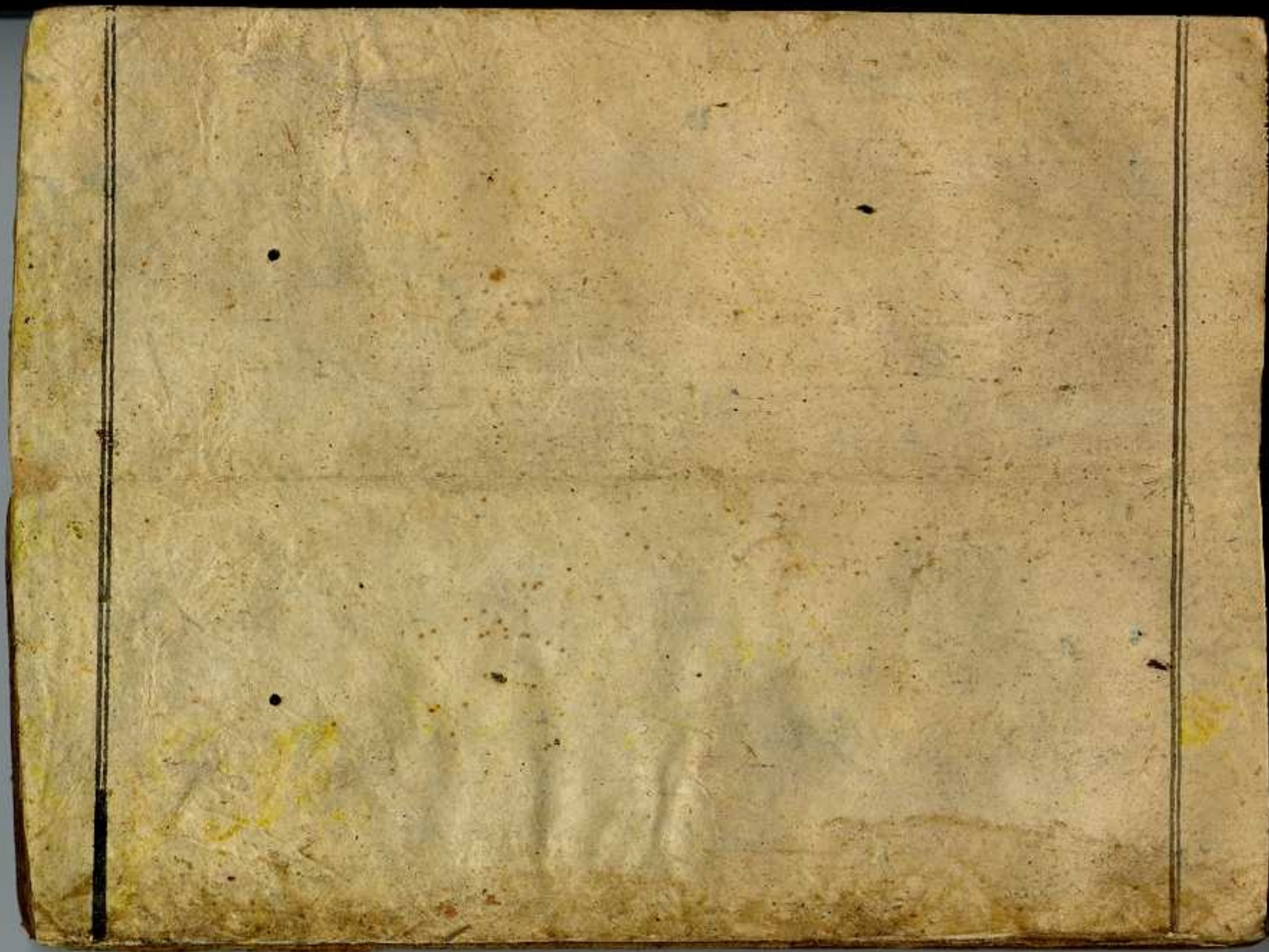
व ० सामयिगु रि १२ विमानावुद्यावावृथिवि जागर्धरानमो
०० लोहविद्याविधय ० सामयिगु नयानामे ॥ १॥ नवदि
दयितव उद्युक्ता निमावाह्यावक मायुव व ० सामयिगु नयानामे
गमनाथ न १२ सामयिगु नयानामे ॥ १॥ नवदि
क ० सामयिगु नयानामे ॥ १॥ नवदि
यासुतस्य रुद्र कथितुमर्हद गमिन् ॥ १॥ उद्युक्त १२ यिनव १
सास्योसावदिनस्य निधिवृथिथय न सामयिगु नयानामे ॥ १॥ नवदि

धिवुर्वेदुनसंगमा ॥ ११ ॥ अथ उक्तं ॥ यितनसा म्यासायि ॥
॥ यथेतिदेवयाने ॥ अस्मि यत्तु स्वधया मर्दता धिवुर्वेदुनसंग
मा ॥ १२ ॥ अग्निष्वाका ॥ यितन ॥ नदग कृत्तसद मयत्तु सुयुक्त
मय ॥ अग्नादवि ॥ यितयतानि वदित्यथा वयि ॥ सर्ववो नद
धातन ॥ १३ ॥ अग्निष्वाका ॥ यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
माधयत्तु ॥ नद ॥ यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
कि ॥ १४ ॥ अग्निष्वाका ॥ यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु

थं यत्ता शुभं विद्यासः । संहवा रुवकु वय ८० स्याम यतथा नृपि ॥
॥ ४५ ॥ आर्त्ता जानूदक्षि लक्ष्मि निषय मयं रुमलि मृली नृपि ॥ मादि ॥
८० सिद्धि यिगवक विमा यदक्ष गय नृपि नाक नाम ॥ ४६ ॥ आर्त्ता
सा अर्त्ता नाम मयं रुमलि नृपि दक्ष दासु र्वम माय । यत्ता शुभं विद्यासः
सुय वय १५ यत्ता रुमलि नृपि दक्ष दासु र्वम माय ॥ ४७ ॥ यत्ता शुभं विद्यासः
दक्ष दासु र्वम माय ॥ ४८ ॥ यत्ता शुभं विद्यासः

॥ ४९ ॥ यत्ता शुभं विद्यासः
निषय मयं रुमलि नृपि दक्ष दासु र्वम माय ॥ ५० ॥ यत्ता शुभं विद्यासः
दक्ष दासु र्वम माय ॥ ५१ ॥ यत्ता शुभं विद्यासः
सुय वय १५ यत्ता रुमलि नृपि दक्ष दासु र्वम माय ॥ ५२ ॥ यत्ता शुभं विद्यासः
दक्ष दासु र्वम माय ॥ ५३ ॥ यत्ता शुभं विद्यासः
८० सुय वय १५ यत्ता रुमलि नृपि दक्ष दासु र्वम माय ॥ ५४ ॥ यत्ता शुभं विद्यासः





कसक
 विमल
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

वराह
 दिवा
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

कथं । द्वादश्यां विवमस्यार्कः । दादा वाचाव । द्वादश्यां ॥ ३३ ॥ द्वादश्यां
नाग्यादस्यां विविनीयिव । द्वादश्यां वहुदश्यां न संध्यायां दत्त
व । द्वादश्यां वल्गुः ॥ ३४ ॥ वासुदवमहायन । वादी गौणी वध्वन
निर्गो वहुर्गो दत्तयथवीवाः । द्वादश्यां न दद्याधमनाह सना ॥ ३५ ॥
न । द्वादश्यां न सना नदीना वृन्द्य गृहानामिव वल्गुदीना । मय
यद्म वल्गुमाका । द्वादश्यां यिनयना ल्कटा ॥ नक्षत्रां यकिर्क

वर्षाभभा । कर्कटदीनानां ॥ ३६ ॥ नस्मिन्दिनैर्महायुद्धं
मादिथयविलं विग्नं । अमावास्यां दत्त ॥ ३७ ॥ नृपार्थक
कना । यिव ॥ ३८ ॥ नक्षत्रादिना वल्गुनेय वाजादयो विना दत्त ॥
गतायुद्धं महावाज नली मसनवाया निम्न ॥ ३९ ॥ नृपार्थक
नक्षत्र । नक्षत्र ॥ सर्वे चकोचवा ॥ पादवानां महालक्ष्मीं वृन्माहा
विश्रयारुवन् ॥ ४० ॥ दिनानि दत्तरी क्वाप्यद्वादश्यां दानिय

३२। दिनद्वयं शुक्लं स्यात्। गाल्याभ्यां द्विर्नित्यं ॥ ३१ ॥ दिवसं
द्विगुणं यद्वा। यद्वा यत्र मदावृत्तं ॥ ३२ ॥ वृत्तं ४२० न्कावगुणं यद्वा
ननु पुंस्त्वयि ॥ ३३ ॥ आख्यातयनेन ॥ ३४ ॥ मि विग्रहं
वक्तव्यं। मस्मिन्नवत् ॥ ३५ ॥ दाहिनासायिकादन्त ॥ ३६ ॥
धृष्टश्रुत्वा दन्तस्य। शिखण्डं वमदावृत्तं ॥ ३७ ॥ यद्यथास्थया ॥
३८ ॥ अग्रे सर्वं निधातिगा ॥ ३९ ॥ धृष्टश्रुत्वा ॥ ४० ॥ कथं

४१। धनावाजा। लीमसन्नतयातिग ॥ ४२ ॥ अशोदितीदलोकाव
ममपुत्रस्य वाहिनी ॥ ४३ ॥ द्वाविंशतिमदस्य स्यात् ॥ ४४ ॥ नथाना
दस्मिन्नामयि। ननु भवत्यदातीनां सहसा लिपुतर्षा ॥ ४५ ॥ ३
मवष्टिक्कसहस्यं स्यात् ॥ ४६ ॥ पुनर्गानां समागत ॥ ४७ ॥ ननु वा
कासेवयंकादन्तीरुव ॥ ४८ ॥ स ॥ यद्यथा ॥ ४९ ॥
वाक्कासेवयंकादन्तीरुव ॥ ५० ॥ म ॥ यद्यथा ॥ ५१ ॥ वृत्तादिवत्

लं यर्क धार्कना द्वायमीति ॥ ४४ ॥ वा द्वा द्वाया विना गवा ग
 प्रवा जि दानय ४। युष्ठा यिभ नृया ग्गुला युद्ध काल निवा कश
 १॥ ४३ ॥ गुवृ रुयानि सवन्ति न सवन्ति वमु विंती न स्यु इति
 सह द्वाया न स्यु इति व उ श्व वा ॥ ४५ ॥ अथ भानि दि वा उ
 उ युवा रु विनियोगि म ॥ ४६ ॥ इति रु व उ द्वा द्वा याना म
 हा म ना ॥ ४८ ॥ व द्वा इति व द्वा युय क्वा उ ना द्वा न

इयधि नय गुं क्वा इति म नृ वृ क्वा द्वा ॥ ४९ ॥ न क्वा व य
 संधाल स द्वा द्वा द्वा म ना ॥ ५० ॥ गाली व द्वा व क्वा द्वा द्वा मान
 व द्वा उ म् अया इति क मि व द्वा म द्वा म् वि व द्वा म् ॥
 ५१ ॥ स द्वा म् म य द्वा क्वा द्वा म् म द्वा द्वा व द्वा य म् व द्वा य म्
 य म् द्वा इति म य युधि म् ॥ ५२ ॥ अथ व द्वा म् द्वा य म्

विस्मयनानस्यमग्नं सद्यः यदा मया ध्यातं भगवद्वाचनमुद्यतं
॥ ८३ ॥ ॐ सावित्री नमो सावित्री ० या नमस्तुभ्यं यः यः १०५ ॥ दवा
वा यदि वा वागो समस्य वि समस्य ॥ ८४ ॥ गुणमज्ञनयद
दाधे यमकमृष्टिनाथिवा नरुयविद्यनगस्य कायसि
द्धिवग्ननि ॥ ८५ ॥ यः ६ मां १५ वयसि ४ ५ ॥ द्वाका ल मदा
य १०० ॥ येन नमस्तुभ्यं नमो नमो दणवर्षानियतव ॥ ८६ ॥

अङ्कानामवर्गं यार्थं प्रयमानं विनश्यति । समं न्यत्र
कृत्यार्थं यथमानं विनश्यति ॥ ८० ॥ ॐ मां कृपया सावित्री
पतिव्याधौ हन्ति वाय ॥ ८१ ॥ मनत्राऽस्मिन् यस्मात् स
र्वयोग्येऽयमुद्यमः ॥ ८२ ॥ ॐ गुरुमिदमदोनानां यत्
लक्षणं दुर्लभं । आयुःशान्तिः सौभाग्यं धनधान्यादिस
मृद ॥ ८३ ॥ यन्मन्त्रं मुखे वक्तुं शक्यं । निश्चयं विवर्द्धयेत् ॥

१ वा पूमगाक ॥

॥ वृत्तिलान्नसोविहि समाप् ॥ १०८ ॥ यथादृक्कमथातिथि

श्वसन्ति ॥ संपन्नमुहं ॥ ॥ म२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

पञ्चयगविष्णो यन्महामिदित्युच्यते ॥ २ ॥ नन्दनर सुनाथ

याचं कवि सं० ८० म व सुताः वैनाजन शि या छि य रु वि विन्द

* १२ वसंतेन जल उनादि वा वसवस्तु व ता सुता ४ । तथन्तरे लभेत्तसा ।

रु विजिले वयादधूः॥

वथायधू४॥ एडमननरुडनादवा सिधवमवूगसुताःवल

तस्यैव नृपस्य दविनिद्वयं दधुः॥ २ ज्ञेयं नृपस्य नृपनाथ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

वयादधू॥ ॥ वनाथनि ॥

२८ वामनू ॥ ४ यस्तु यथा विप्रसिद्धा यथा यद्वसदेव नृप ॥ यथा

॥ यिज्ञायास्तन वास्तुयं गी॥ यवान्वा निपु निमय॥ यदलं ॥ ३५ ॥

॥ ३८ ॥

रुक्मिणीयाम्भोजविहारादृष्टिं सक्तं वृक्षा मिति सं-
यथा तदेव तर्जनीमादि कुमिनिङ्ग सायन्न पदवीं मूकं नैवुद्धं नैव स-
लाङ्घित पदं ॥ गुरुं ॥ विष्णुवन्द्या ॥ मृदा सख्येने विद्या मितु-
दं वन्द्या ॥

श्री कृष्णाय नमः
(नमः गाय)

१ नमः श्री गणेशाय नमः ॥
२ ॐ श्री जगन्नाथाय नमः ॥
३ ॐ सागरदाय नमः ॥
४ ॐ श्री भिमसेन सह्या ॥

म नि म्भ्य र म म्भ्य कृष्ण वृक्षेय न स्य नि कृति ॥
न नि म्भ्य न कार सा म वा न वृक्ष वा न च सा वा न स नि ग विंठ अल स्र ई न

१ ॐ नमाना नायकाय ॥ शास्त्र विधि चक्षुः ॥ यद्गुरु वनं ० वृक्षियाय ॥ यजमान स मात-
कृत्यं न करु कया चक ॥ न गति नूत वा व द्दुः ॥ भव न था वा व द्दुः ॥ ॐ य वा स द्दुः ॥
सति मात कृत्या व यश्च ग व वा य ॥ जाना गय माल ॥ निग्य कर्मा याय ॥ ॥ अथ वि-
वृत्ति का ॥ भि सर्व थ ॥ सूर्या दी व वा ॥ ॐ श्री कृष्ण ॥ सान वन ॥ गुरु न स सान्नि कृ वा ॥ ना-
सा र्घ्य पाण्डु डा ॥ आन य ॥ गायत्री मन्त्र ए नि वी द्दुः ॥ ॐ यद्गु वा द्दुः ॥ य वि स म्भ-
दनं ॥ ॐ मान भक्ति उय न यनं ॥ ॐ वा द्दुः ॥ तुल्य वनं ॥ ॐ गवा या मि यद्गु द्दुः ॥
ॐ शुभ थ स्थ ममी गुरु ति ॥ गायत्री विनाय ॥ ॐ गायत्री धन वनं ॥ यीत वृक्षे न यनं

मूल गुवि कुतु तिस हा मया य ४

[illegible][illegible]

विष्णु ॥ उडमका ॥ उं यज्ञायवीर्य ॥ स्यात् ॥ उं यादलली ॥ वृद्ध ॥ १२ ॥
 विष्णु ॥ उडाय ॥ उं वृद्धवति ॥ वृद्धसी ॥ वृद्धिसद्वृद्धय ॥ धवकीवृद्धय
 ॥ वृद्धसी ॥ यकं सव्ययणी ॥ वृद्धाविथ ॥ यकवावृद्धन ॥ मद्राद्यादृमि
 कुण ॥ घृणादृमिविथ ॥ सवयईना ॥ वृद्धयार्थघृणादृमिविथ ॥ गधेवति
 लादृमि ॥ उं सवयनज ॥ मृति ॥ मस्युर्ल ॥ भगयाया ॥ वृद्धिकानियदृमिमिथ
 र्थ ॥ अगमन्धादि ॥ भवदृक् ॥ सुवानदंदावगा ॥ धवृत् ॥ वृद्धपाकयावकी
 ॥ वृद्धिवाद्गान ॥ वृद्धिकानियदृमिविथिसम ॥ १३ ॥ सामन्तिकसवृद्धसादृधृक्
 वा ॥ उडमका ॥ उं यज्ञायवीर्य ॥ स्यात् ॥ उं यादलली ॥ वृद्ध ॥ १२ ॥

उं नमः ॥ गदाधवाय ॥ अथ ॥ वायवधि ॥ ववकीयायाव ॥ कामान
 न ॥ यडमानन आवम ॥ सूर्यार्थकावय ॥ उं अद्यादि ॥ यथा ॥ गान
 यडमाननस्ययिदृवाद्ग ॥ सविवृद्धिक ॥ उं दृक् ॥ सूर्यार्थय ॥ अर्थनमः
 उं अद्यादि ॥ रास्क ॥ वृद्धाय ॥ यथ ॥ ॥ उडमाननयासायावृद्ध
 ग ॥ कनन ॥ आनन ॥ उं वि ॥ स्यादव ॥ उं दमा ॥ सननमः ॥ अग
 वृद्धाननवद ॥ वृद्धाय ॥ उं दमा ॥ सननमः ॥ ॥ अननयादाद्य ॥

पितृवाद्गणसाविकुलिकशार्दयादार्थनमः॥ ॥ उं नमास्तु नकाय
सहस्रमूर्कयति ॥ ॥ पितृयद्गुण ॥ अयस्यन ॥ यथं (गो) पितृन
यथा नाम सामगर्मन निलकुण्डमासनस्यध्व ॥ यिनामदयथ
नाम सामगर्मन निलकुण्डमासनस्यध्व ॥ ययिनामदयथनाम
सामगर्मन निलकुण्डमासनस्यध्व ॥ पूर्य ॥ उं पितृयद्गुणस्यध्व
यिथ ॥ स्वध्वानमः॥ यिनामदयथ ॥ यिथ ॥ स्वध्वानमः॥ ययिनाम

दय ॥ स्वध्वानमः॥ अकृतयित ॥ मीमदक ॥ यितवनी
गृथक ॥ यितव ॥ यितव ॥ सूध्व ॥ ॥ ययिनामदयथनाम
निलकुण्डमासनस्यध्व ॥ अयस्यन ॥ अमूक (गो) पितृयद्गुणनाम
सामगर्मन साविकुलिकशार्दयादार्थस्यध्व ॥ ॥
यिनामदयथनाम सामगर्मन निलकुण्डमासनस्यध्व ॥ ययिनामद
यथनाम सामगर्मन निलकुण्डमासनस्यध्व ॥ ॥ उं पितृयद्गुणस्यध्व

वेद्युष्टी दीयमानादकश्चिया । सकलं कुरु विष्णुः । गायकर्मक
नष्टकनष्ट ॥ ॥ वीविनिका नयावकुशोक्तन ॥ सद्यः ॥ उं कृतिथि
स्य ॥ सनकादिमनूष्या गदाधनाय वृद्धमासनीनमः ॥ यद्यनिस
॥ नगडाकन ॥ पादार्थ ॥ ॥ थाविनिका नयाव ॥ कुशोक्त
न ॥ यिदिसिदाव्ययजा ॥ ॥ स्वयादयकाल ॥ नष्टमष्टमिग
का ॥ आवश ॥ विष्णुदव ॥ पूर्वोक्तनूखंस्त्रि ॥ यिदयद ॥ उक्तन ॥

त्रिमूर्त्यस्तु ॥ अतिथियश्चिमादिमूर्त्यस्तु ॥ यत्माननत्था क
न ॥ कामल ॥ खेवलीनद्वीकाव ॥ उवलीन ॥ द्वाकल ॥ अकन ॥ यभा
सी ॥ दंकाव ॥ यत्थ ॥ उं आदीयिगृत्तु सुविदशुं ॥ अविस्मिनयार्
वविकमनयविष्णु ॥ वदिमदाय स्वधया ॥ नस्यरुडन ॥ यिदय
वृद्धागमिष्ट ॥ यिगृयिगामदययिगाद ॥ वृद्धागमिष्ट ॥ उं अग्नि
कायिगृगला ॥ द्वावीनद्वीउमदिगं ॥ नथ ॥ वदिमद ॥ यानुयामा

कवर्तन ॥ ॥

प्रथितवः ४ श्रुतिः ४ यमीवीमाद्ययास्तद्वद्वीवीमयिसामया ४
 वक्राहृतयिः ४ यश्च ४ सद्यः सुवनामम सद्यः ४ अद्वैतलखि यम
 वक्राकिवाहम गिलावर्कयुसुवादका वक्राकिवाहसा ४ यम
 वक्रागिरि ४ यद्वदनिधिं सर्वगस्तथा ॥ १०० यनवक्रावधन ॥
 सुकननवक्रा ॥ १०१ गतामिदिवीलाकार्य कुमनविहितास्त
 यः ४ मनसावायुसुतयु विद्यवर्हनिथाऊय ॥ वाक्मलेषु
 ४ १०२ गताधनयानन ॥ १०३

प्रेमीनिय ४ यथा ॥ गिलकुं ४ वक्रा ४ यथा ४ वनन ॥ १०४ आसध्वं २ ॥
 ॥ १०५ यथावर्कयानन ॥ १०६ विद्यवर्कयाननमस्तु ॥ प्रितवः ४
 यितामद यथा ॥ मद्र सुसनिधानमस्तु ॥ ॥ सनान ॥ विद्यवर्कयानन
 ॥ १०७ यथावर्कयानन ॥ १०८ विद्यवर्कयाननमस्तु ॥ १०९ यथावर्कयानन
 ॥ ११० यथावर्कयाननमस्तु ॥ १११ यथावर्कयाननमस्तु ॥ ११२ यथावर्कयानन
 ॥ ११३ यथावर्कयाननमस्तु ॥ ११४ यथावर्कयाननमस्तु ॥ ११५ यथावर्कयाननमस्तु ॥

अथिग अथय विदिगि वृज २

ॐ विगुनिलकुग वृदमासनीस्यधा ॥ त्वं विगामरु ययिगामरु
॥ ययिगामरु ॥ ॥ विसास्यीत्यासयाय ॥ उंगदाधवायद्वदयाय
तमः ॥ ॐ यादि ॥ अर्थयागयूजा ॥ वक्र (न) तमः ॥ वि. क्व. व. नमः ॥
वृदायनमः ॥ ॥ ॐ गंगी वज्रमुनायेव (ग) दा वृदि सनस
ति ॥ नमो दासि धृका वनि उल इमि सनि धाकु नृ ॥ ॐ ॐ ममव
नृ ॥ ॥ अतनमस्तु नृ यिवा ॥ ॥ धनमृदायद्व (य) वन्द
मदालिवाय ॥ वननमृकय ॥ ॐ ॐ ममव नृ ॥ ॥ कुजनवाव गहायम

॥ वननमृकय ॥

नादि धृयदीयादि यूजा ॥ ॥ ॐ अज्ञानमः ॥ ॐ वननयनमः
॥ ॐ अयिपकयनमः ॥ ॥ यविगक वन्दन यूय धृय ॥ नना
मान यूजा दक व लादि अर्थयाग दक न स धाकु ॥ अन्म
यूजा ॥ अर्थयाग यूय ^{कुल युलि} उडनादि गायगाडिय ॥ मृदक साकु
वन यवन ॥ ॥ ॐ उक वनमो दव स ॥ ॐ नमः सि ॥ ॥ डव
ववती स कु गा दनन याय ॥ ॐ वडि विष्टवा सूखा न याय सन

धर्मिणो वशान् कामाक्षीमूगलमना ॥ ॐ यथा वदन्ति कथाश्रुम ॥
अथ सद्यन्त ॥ अङ्गानिल उल्लन ॥ ॥ ॐ गार्ग्य ॥ गार्ग्ययिदुत्रायथ
नाम जर्मन दक्षिणे स्वधायिगृह्यशा ॥ ॥ स्वधधवतिसयाय ॥
सद्यन्त ॥ ॐ वक्रादनति ॥ ॐ यथा वदन्ति कथाश्रुम ॥ ॥ सद्यन्त

दीर्घाय

स्वानरुद्धि विधिस्थित ॥ ॥ ॐ सद्यवा धादज्जवद्यसृगा कार्पिड
नगित्री । वक्रवाका ॥ सद्यदीय ॥ ॐ गार्ग्य ॥ सद्यसिमानसगपिडा
नरुद्धि ॥ ॐ वक्रादनति ॥ ॐ यथा वदन्ति कथाश्रुम ॥ ॥ सद्यन्त

दीर्घाय

स्वानरुद्धि विधिस्थित ॥ ॥ ॐ सद्यवा धादज्जवद्यसृगा कार्पिड
नगित्री । वक्रवाका ॥ सद्यदीय ॥ ॐ गार्ग्य ॥ सद्यसिमानसगपिडा
नरुद्धि ॥ ॐ वक्रादनति ॥ ॐ यथा वदन्ति कथाश्रुम ॥ ॥ सद्यन्त

दीर्घाय
स्वानरुद्धि विधिस्थित ॥ ॥ ॐ सद्यवा धादज्जवद्यसृगा कार्पिड
नगित्री । वक्रवाका ॥ सद्यदीय ॥ ॐ गार्ग्य ॥ सद्यसिमानसगपिडा
नरुद्धि ॥ ॐ वक्रादनति ॥ ॐ यथा वदन्ति कथाश्रुम ॥ ॥ सद्यन्त

ॐ यथा वदन्ति कथाश्रुम ॥ ॥ सद्यन्त

यदुलीकादी सवाद्यार्थनप्रशुविः॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गच्छ
निश्चयं ददाय नतमस्तु ॥ वाक्कलयालाकातमस्तु ॥ गं
यात्रिणवस्तुनः॥ असाध्यं अयसस्तु ॥ यद्युक्तानधिस्तु ॥ १०६
ॐ अद्यादि यः ॥ १०७ ॥ गौतमस्य गौतमिहवाद्यं सावकुलिकं शब्दं
कर्तुं सक्ति यादृशं काल इव गौतमस्य मिवाद्यं गौतमस्य सति
धानमस्तु ॥ यिदृशिनमस्तु ययिगामस्तु सुसतिनमस्तु ॥ ॥

विश्वदेवादि यद्वर्कयुष्माद्गामस्तु कविस्तु ॥ वृक्षस्तु ॥ ॥
वाक्कलनयनिर्वर्तनं ॥ ॐ कुरु ॥ सत्यं ॥ विश्वदेवस्तु ॥
नमः ॥ ॐ कालाय नमः ॥ ॐ कोकाय नमः ॥ ॥ अयसस्तु ॥ यिदृ
यस्तु ॥ ॐ आथाक्षवस्तु सामंश्च विष्णुस्तु ॥ ॥ ॥
यस्तु ॥ ॐ अथाक्षवस्तु सामंश्च विष्णुस्तु ॥ ॥ ॥
यस्तु ॥ ॐ अथाक्षवस्तु सामंश्च विष्णुस्तु ॥ ॥ ॥

मृदवमृदो मृदिवृद्धेयमवडन्यना मृद्विद्वनयविश्वस्यस्य
 वसिमि ४॥ यविश्व ॥ उं वि (ध्वदवयागयविश्वकीनमः) उं वे
 नवदवयागयविश्वकीनमः ॥ यविश्वयदवतथासायकीन ॥ ॥
 उं ननादवी हि ॥ लंखन ॥ ॥ उं उाधय ४ समवदन साम
 नसोनाला यमीकु (मृदुवायक लसु ० नाडन्यात्रयामसि ॥ अ
 नतत्रा उं गंधुदावाद्वाधयो नियययकवीकली ४ उं वी ४

६२

श्री सर्वभूतार्ता मंसिदायकयवियं ॥ वगत २॥ उं वी ४ वगत
 वी ४ ॥ यानत २॥ उं धूमसि ॥ धूमश कुशकनजलन ॥ ॥
 मंसिदाय (मंसिदाय) मंसिदाय मंसिदाय मंसिदाय मंसिदाय
 मंसिदाय मंसिदाय मंसिदाय मंसिदाय मंसिदाय ॥ मंसिदाय (मंसिदाय) मंसिदाय
 मंसिदाय मंसिदाय मंसिदाय मंसिदाय मंसिदाय ॥ ॥
 मंसिदाय ॥ उं वि (ध्वदवयागनिवाकलानिसनु ॥ उं अ (मंसिदाय)

नेत्रद्वयानि निवाह्य हानि सन्तु ॥ ॥ अं (गं) यी न वृ (हं) न च वृ न
समस्तुर्न यं व दूया वकी हं ॥ ॐ वि (श्च) द्या द व द्या अ (गं) व द्या न
व द्या अ १ यि रुत्रा द्वा सी व क्तु लिक गार्द्ध ॐ द मा वा द यि द्या ॥ ॐ
वा द्य ॥ सा गुरु गृही त्या वा म जानूं स्यू वा य (थे) ॥ ॐ वि (श्च)
दत्त स आ ग न १ गृ ह्म त म ॐ न ० ह वं । न दी व दि नि सी द ग वि
(श्च) दत्ता १ गृ ह्म त म ० ह व म थ अ न वि श्र य ड य द्या वि श्र

य १ थ अ ग्री डे द्वा ड न वा य ड्वा अ स घा रि यं व दि वि मा द य धं ॥ ॥
ॐ आ ग वृ त्तु म री रा गं वि (श्च) दत्ता म हा व वा १ य य ग वि धि रा ग
ॐ सा व धा ना रु व रु गं ॥ ॐ आ वा द्य ॥ ॥ ॐ स द्वा य जी र्मी यू नू य
॥ वि (श्च) दत्ता य ग स या द्वा अ न का या व त न्ने ॥ ॥ ॐ वि (श्च)
दत्ता वा ड्वा र्नी ॥ वि (श्च) दत्ता य ग ख व ग म ग उ व ग न य वि श्र
न वा य ॥ ॐ या दि द्या आ य १ य य सा स व रु व द्या नि वि द्या म द्वा

सिद्धि
लिये

वैश्या
वृद्ध

नि. क. रा. य. वा. क. या. द. व. नि. पु. ह. ल. त. व.

कलिक शार्ङ्ग विनयागामनस्य ध्या ॥ विनामह यागामनस्य ध्या ॥
ययिनामह यागामनस्य ध्या ॥ स्वउग ग्रेठ ३ कायायवर्ग ॥
यविगुह दावर्लखनदाय ॥ उं अयविगुयविगुति ॥ विनयाग
उस्थान ॥ नवयिनामह ययिनामह ॥ उं विनयाग यविगुकस्य ध्या
॥ नवयिनामह ययिनामह ॥ उं यविगु ॥ ४ ॥ यविगु ॥ उं नव
यविगु ॥ ३ लिखन ॥ कामलन ॥ ३ उं निहासिसामदेववर्ग ॥
विपकसां पुन यागामनस्य ध्या ॥ ३ ॥

सवाधवनिर्मित ॥ यत्नमहि ॥ युक्त ॥ ध्याया विनयनलाकान्
योक्षदित ॥ साहास्य ध्या ॥ यग ३ उं गंधदोषति ॥ यानेन ३ उं
यगतलक्ष्मी ॥ धूप ३ उं धूपसिधुर्व ॥ कुगनिलडलन ॥ उं ग
नस्य (ला) विगुयादगसी वहुलिकयाध्या विगुयायथानाम
सामगर्मन न साधयागुयविगुर्व विनामह यथानामसाम
गर्मन न साधयागुयविगुर्व विनामह यथानामसाम

मिलि

नथ

॥

यथा

यथा ॥ यविर्ननावायनस्मिन् यविर्नवहिद्वान्मादि

मा ॥ ॥ थ सकलताया द्धवन क्षीनयोगनवरा ॥

वाक्कासद्ववन क्षीन कस्मिन्तावता द्धवन ॥ उद

॥

226

Victor
Hind

ASHA ARCHIVES

2192 I

कामादि विषयं ॥ यजमाननयूवादि मुख्यं कर्वांगन्यास ॥
 उं वम (मयुक्तिः) ॥ वनजालीयेन हाय ॥ उं वंज विहृदा ॥ यज
 न ॥ उं वं वं (वनमः) ॥ उं यज यनयनमः ॥ उं सर्वथायव शान
 मः ॥ उं यज यननिवृत्ति ॥ यत्र क सि र्थि वा ऊ विरय ॥ उं स
 धूवातामनायनमध्व कनक्ति सिध्व ॥ माधीन र्थिनामध्वनक
 मः ॥ मध्वो न सुत ॥ ४ विरय

धूमान्यास
 ॥ ॥ दीपजासाय ॥ उं ॐ ० स ॥ ४ विरय सुत विरय सुत
 गावदिषतिथिद्रव नमः ॥ नृषद्वनसदृत्त का (गाजासुत
 जाबूदिजासुत वद ॥ ॥ दीपजावाला ॥ उं ॐ ० स ॥ ४
 दीपजा आगनका याव विरय (ध्व का म ॥ सकल कर्मान
 का म ॥ कुडी कामल सहित न ॥ सद्य न विरय विरय विकल
 ह वि विरय सुत ॥ ३

वाक् कमलुत्तु द्वा द्वा व वा द्वा द्वा सद्वन आह्वा काय ॥ ॐ
 श्री कवननमस्तु विधा ॥ ॥ वाक् वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ ॐ कनूव
 ॥ ॥ वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ ॥ जय सवनन दिन
 द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ ॐ ज्ञानीना (१५) ज्ञानीना समुप
 ज्ञानीना द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ ॐ ज्ञानीना द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा
 यद्वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ ॐ ज्ञानीना द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा

विद्युत्तु द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा

सन्यध ॥ वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ ॐ ज्ञानीना द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा
 श्री गान्धर्व द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ ॐ ज्ञानीना द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा
 सध ॥ वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ ॐ ज्ञानीना द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा
 ॥ गिल्लु द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ ॐ ज्ञानीना द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा
 यिगुमन द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ गिल्लु द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ ॐ ज्ञानीना द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा
 ययिगुमन द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ॥ ॐ ज्ञानीना द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा

यजमान
 यजमान

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

लक्ष्मी ॥ निलकु (मदकन ॥ ॐ ॐ दैयमा गि न स ग्या ग ॥
 सुभो निधाय ॥ ॥ यजमान न ॥ ॐ ॐ (मोदुर्न ॥ ॥ वा
 द (न ॥ ॐ मुदुर्न ॥ ॥ सद्य न वि (व्यध व स न ॥ नृ न
 वा य य ॥ ॥ यजमान न वि (व्यध व स न ॥ ॐ ॐ
 धी वी न या न श्री धि धान ॥ ॐ ॐ द्रु ल स म स नृ नृ नृ नृ नृ नृ
 मिसा द ॥ ॥ अद्रु न न ॥ ॐ ॐ दै वि द्रु ॥ ॐ वि ध द व न
 ॥ अ धि न वि धि नि अ वा र्य नृ वि य ॥ ॥

२ विःस्थदवृक्ष आनञ्जलि

卷之四

[illegible]

ननु गिरिनि कायमुद्यत स्यात्कामि ॥ कुक्षयद्वान्तो विद्य ॥ वाङ्म
 लश्च ॥ हविर्वीजनादिप्रवर्य ॥ ॥ मालवामर्गधूनक अनि
 शिआदिन ॥ धर्मधूनकाव अन्नसंकल्पयाय यजुमाननसदान
 कृष्णकृष्णदकं गृहीत्वा ॥ उं वि ॥ ध्यायदवशा अ ॥ ग्रथेऽक्षनवथव
 यः ॥ वृद्धमन्नं सद्युर्नममस्यं समीं सस्यं सस्यं सायकवर्णं दक
 श्यायकवर्णं सदिनं यदकं नददा श्यामिनिविद्ववर्जितं नश्यत्वा

हा ॥ वृद्धमन्नसंकल्पसिद्धि वस्तु ॥ ॥ अयमवदान कुक्षानिल
 उल्लेन ॥ विगृह्यकृष्ण ॥ उं गार्गस्य ॥ गार्गयिपुत्रादृणस्य वक्तुलि
 कृष्णार्धं विगृह्यितामहययिता मृदुश ॥ वृद्धमन्नं सनिर्वमद्युर्न
 समस्यं समीं सस्यं सस्यं सायकवर्णं दकं श्यायकवर्णं सदिनं
 यदकं नददा श्यामिनिविद्ववर्जितं नश्यत्वा ॥ ॥ वृद्धमन्नसंकल्पसिद्धि वस्तु ॥ वाङ्मल सकव उदकदानं ॥

अथिनि विदिनि आचार्य धन वाधन अनुम

ननु गिरिनि कायमुद्यत स्यात्कामि ॥ कुक्षयद्वान्तो विद्य ॥ वाङ्म
 लश्च ॥ हविर्वीजनादिप्रवर्य ॥ ॥ मालवामर्गधूनक अनि
 शिआदिन ॥ धर्मधूनकाव अन्नसंकल्पयाय यजुमाननसदान
 कृष्णकृष्णदकं गृहीत्वा ॥ उं वि ॥ ध्यायदवशा अ ॥ ग्रथेऽक्षनवथव
 यः ॥ वृद्धमन्नं सद्युर्नममस्यं समीं सस्यं सस्यं सायकवर्णं दक
 श्यायकवर्णं सदिनं यदकं नददा श्यामिनिविद्ववर्जितं नश्यत्वा

ननु गिरिनि कायमुद्यत स्यात्कामि ॥ कुक्षयद्वान्तो विद्य ॥ वाङ्म
 लश्च ॥ हविर्वीजनादिप्रवर्य ॥ ॥ मालवामर्गधूनक अनि
 शिआदिन ॥ धर्मधूनकाव अन्नसंकल्पयाय यजुमाननसदान
 कृष्णकृष्णदकं गृहीत्वा ॥ उं वि ॥ ध्यायदवशा अ ॥ ग्रथेऽक्षनवथव
 यः ॥ वृद्धमन्नं सद्युर्नममस्यं समीं सस्यं सस्यं सायकवर्णं दक
 श्यायकवर्णं सदिनं यदकं नददा श्यामिनिविद्ववर्जितं नश्यत्वा

॥ अथ नमः ॥ अथ नमः ॥

विष्णुदत्त...

...

य ॥ ७ ॥ वीं जन दियु नय ॥ विष्णुदत्त... सच्चिदिक युदान ॥
॥ अथ धून दाव... शसनाकातन धिस्य विव वायक वस्य ॥ धन
यजमानन कुशन र्यथ दथोय ॥ उं अया धूम धूल माया काशी
कान्ति सुवन्तिका यून दानावगीहूया सकेत मोक्ष दायक ॥
पिण्ड ॥ धेधाय सल्लखन दाय ॥ उं यूनी सफ य विगानि शाद्व
काल सदा य ॥ ७ ॥ लिखे उमो जलदुक्के यिगृह माक्ष दायका
नाको लुख वनन स क्षीत्रजा तथाव विगृह न ॥ असं कृ श्य वीताना यक
नादावम कुल ॥ उं विष्णु गद दाना दक य विगृह न सन ॥ उय निरुक्ति ग
॥ ॥ पुन सीव न दाय ॥ उं सुगंधिर्वद न नव पुन सीव न्द न न
व ॥ नहु मो सिं व य इध यिगृहा क स्या माक्ष द ॥ ॥ गंगानि न
दाय ॥ गया लाक्ष ॥ उं गाम्नी स्य नरक तिल कुण यिगृह सन स
धा ॥ नरक यिता मरु तिल कुण यिगृह सन सुधा ॥ नरक ययिता म
रु तिल कुण यिगृह सन सुधा ॥ संस्कार हीन वाल विकल यिगृह स
न उय निरुक्ति ग ॥ यदु वा सन वाय दय लाल ॥ ॥ उं अग्नि
थ वा सन वाय कुण वाय ॥

॥ अथ नमः ॥ अथ नमः ॥ अथ नमः ॥ अथ नमः ॥

दशमोऽङ्गुली वा ॥ अथ दशमोऽङ्गुली वा ॥ इमो दशमोऽङ्गुली वा ॥
 कायानुययान्गति ॥ ॥ मालदाश्वन ॥ पितृनक्षत्रतयिषुसर्नड
 यतिष्ठितां ॥ ॥ यिषुयाशासर्नव ॥ ॥ सद्ययादाव ॥ विक्रम
 यिषुयागसकुशाकनस्य ॥ विष्वदवसद्वनवन ॥ यजमान
 न ॥ उँदेधिरुक् ॥ विष्वदववाक्रीस्य ॥ उँदेधिरुक् ॥ ॥
 अथ सद्यन ॥ निलतस्य ॥ दक्षिणादिमुखन ॥ धिगृयकस ॥ यजमान
 यजमानेन ॥ उँदेधिरुक् ॥ वाक्रीस्य ॥ उँदेधिरुक् ॥

न ॥ उँदेधिरुक् ॥ वाक्रीस्य ॥ उँदेधिरुक् ॥ ॥ यजमानस्यजा
 नृयाइमोनिधाय ॥ ॥ विकलपिषुसर्वविदावजादत ॥ उँ
 यजमिष्याकायजूनमिष्याकामधेदिव ॥ स्वधयामादयन ॥ नर्य
 ॥ स्वधाउसूनीनिभर्ता ॥ यथावर्गं नृकल्ययानि ॥ यिषुवर्गमृ
 ताथय ॥ मातृवर्गसु ॥ धेवव ॥ गुर्वसह ॥ नर्वधूना ॥ यवाभुर्वाध
 वा ॥ सुगा ॥ यमजलनृकयिषुस्य ॥ यगदावाविवर्गिता ॥ कि

दशमोऽङ्गुली वा ॥ अथ दशमोऽङ्गुली वा ॥ इमो दशमोऽङ्गुली वा ॥

यजमानेन ॥ उँदेधिरुक् ॥ वाक्रीस्य ॥ उँदेधिरुक् ॥

॥ यजमानस्यजा ॥ नृयाइमोनिधाय ॥ ॥ विकलपिषुसर्वविदावजादत ॥ उँ

५ लेशनदाय

कर्मद्वय उ० न० ह० दि

[illegible][illegible]

यष्टुगर्म ॥ ॐ अथादि ॥ ॐ गार्ग्यस्य ॥ गार्ग्यस्य विष्णुना दृष्टं सर्ववृ
त्तिकथा ॥ विष्णुने यथा नाम गार्ग्यस्य न चतुर्गुणं न सौख्यं ॥
न च वः ॥ विष्णुने वसवः ॥ सुधध्वं ॥ पुनः द्वितीयं गार्ग्यस्य गृहीत्वा
॥ ॐ गार्ग्यस्य देवा द्युतसदं वा ॥ मसदं यथा मगृहीत्वा ॥
नायवायुं गृहीत्वा ॥ मसतथा निविन्द्या यवा इष्टुगर्म ॥
ॐ अथादि ॥ ॐ गार्ग्यस्य ॥ विष्णुना दृष्टं यथा नाम गार्ग्यस्य न चतुर्गुणं

विष्णुने सौख्यं ॥ न च वः ॥ विष्णुना दृष्टं यथा नाम गार्ग्यस्य न चतुर्गुणं
॥ द्वितीयं गार्ग्यस्य गृहीत्वा ॥ ॐ गार्ग्यस्य देवा द्युतसदं वा ॥ मसदं
यथा मगृहीत्वा ॥ नायवायुं गृहीत्वा ॥ मसतथा निविन्द्या यवा इष्टुगर्म ॥
ॐ अथादि ॥ ॐ गार्ग्यस्य ॥ विष्णुना दृष्टं यथा नाम गार्ग्यस्य न चतुर्गुणं
विष्णुने सौख्यं ॥ न च वः ॥ विष्णुना दृष्टं यथा नाम गार्ग्यस्य न चतुर्गुणं
॥ द्वितीयं गार्ग्यस्य गृहीत्वा ॥ ॐ गार्ग्यस्य देवा द्युतसदं वा ॥ मसदं
यथा मगृहीत्वा ॥ नायवायुं गृहीत्वा ॥ मसतथा निविन्द्या यवा इष्टुगर्म ॥
ॐ अथादि ॥ ॐ गार्ग्यस्य ॥ विष्णुना दृष्टं यथा नाम गार्ग्यस्य न चतुर्गुणं

विष्णु राग स्रग्ध ॥ विनामह विष्णु राग स्रग्ध ॥ विनामह विष्णु राग
 स्रग्ध ॥ ॥ विनक्ति नायि विष्णु स्रग्ध ॥ ॐ अंग विष्णु राग स्रग्ध
 यथा राग माविषा यिषट् ॥ हस्त रूमो समा ॥ ॐ मीम
 द न यिषट् यथा राग माविषा यिषट् ॥ ॐ मीम
 न ॥ ॐ वग्न न मृदु नाद वा वसव कि वृत्त मुग ॥ विथ ग व न न
 साह विविन्दु वया दध ॥ ॐ वग्न नाय न मृदु ॥ गीष्वा य व न

न ॥ ॐ वग्न नाय न मृदु ॥ गीष्वा य व न

दायव ॥ वर्षा वग्न वद ॥ ॐ वग्न नाय न मृदु ॥ गीष्वा य व न
 नमः ॥ मास सर्व कृत् न शान नमः ॥ अक्षर द शुशान नमः ॥ चकाद
 स वृद्ध शान नमः ॥ वाद ग्म दिशु शान नमः ॥ विष्णु विनामह यथि न
 मद शान नमः ॥ हस्त सभन ॥ गिल कृष्ण दस्त द कृष्ण दस्त ॥ ॐ
 गीष्वा नाय विष्णु नाय द शान नमः ॥ विष्णु विनामह यथि न
 मद शान नमः ॥ गिल कृष्ण दस्त द कृष्ण दस्त ॥ ॐ

ॐ वग्न नाय न मृदु ॥ गीष्वा य व न

मशर्मन गिलादक यिषुर्द्य स्वधा ॥ उं गार्ग्य ययितामद यध
नामशर्मन गिलादक यिषुर्द्य स्वधा ॥ ॥ गिलादक ॥ उजमका
लख सयाचक यिषुसग ॥ उं नभाव ४ यिनत्रा न माय नभाव ४ यि
नत्रायाय नभाव ४ यिनत्रा जीवाय नभाव ४ यिनत्र ४ स्वधाथ न
भाव ४ यिनत्राद्या नाय नभाव ४ यिनत्रा मन्य नभाव ४ यिनत्र ४ यि
नत्रा नभाव ४ यिनत्रा दक सलाव ४ यिनत्रा दध नभाव ४

यिनत्रावास ४ ॥ यिषु यिषु यज्ञाय वीगक स्वधा ॥ यितामद यिषु यज्ञ
यवीगक यिषु वारस स्वधा ॥ ययितामद यिषु यज्ञाय वीगक यिषु वारस
स्वधा ॥ विकत्र यिषु यज्ञाय वीगक उयनिमिर्गा ॥ ॥ यिन
त्र यिषु चन्दन स्वधा ॥ यितामद ययितामद ॥ ३ ॥ यिनत्र यिषु यज्ञ
कादन स्वधा ॥ ३ ॥ यिनत्र यिषु माला यज्ञ स्वधा ॥ ३ ॥ ॥ यम्यकीनी
मवाजादि नानासूय मालिका ॥ यज्ञ नु यिनत्रा यज्ञ व गिवला

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

दुदानाद्वैतयिषुयदानय (धर्कं रुतसंयायममु ॥ गाययुक्त
 नमाद्वैतयिषुयदानय (धर्कं रुतसंयायममु ॥ दानावभाक
 न४यमानश्चाद्वैतममु ॥ विद्यायविषुयुममु ॥ कालातीनवस
 मीन गन्तव्यं निर्विक्रममु ॥ यथादिष्टं नश्चा ज्ञेयममु ॥
 मिलकु (गोदकीगृहीत्वा ॥ उदवेसयित्वा ॥ यमुवयर्हं यमुवय
 रुयतिर्गुगाय ॥ दिव्यागन्धर्व ॥ नरपू४कनने ४युनामुवाचय

निर्वीचनः स्वदनुः स्वधा ॥ यथा (गोपुत्र) स्वदनुः स्वधा ॥ कुम्भो निध
 य ॥ अग्नौ न्योदि ॥ ० ॥ अथ यद्वद्वन्माने यनयितुं (ध) विधि
 (ध) इति ॥ आहुतनादि चन्दनादि यथा कलका कलदि धूप
 दीप छन्दः कल यथादि ॥ अथ ॥ इत्यनयितुं म (ध) यानुं सादि ॥
 अग्नौ न्योदि ॥ ॥ इति कलका ॥ अथ यनयितुं म यानुं शान्ति ॥
 आहुतनादिका कायाव । यनयितुं लूखाला खलुलयाव यवि
 ४ यनयानुं यदि य विन जा दिन लय सकर्ता ॥ २

द्वांदव लंखनसुक्तिं लमात्राव । यिनामदादि स्व उक्तिं
 समानक्या यद्वन्मा ॥ ० ॥ यनमग्नौ यनयितुं ॥ वाक् ॥ इत्यसमान
 मनसु ॥ यिनायमव (ध) यानुं लोके ॥ स्वधानसा यद्वादि व (ध) क
 ल्यामां ॥ छन्दः लाकी यिनायु गमाः सियनमगिति यन लाकी य
 विनायु दि यानुं लोके मयुं ॥ ॥ यवानुगर्गयन ॥ यिनम रुदिदा
 मित निवमसु वि (ध) यानुं जायमानं विन जी विना ॥ ग रुम

दावता यजन सनक मया । अकर्म वा अहीनव । गच्छ सिधिर
विष्णुके ॥ गो म्रम्य (गो म्र) यादि ॥ यिष्टु वृद्धे शिखा दश विष्णु मयि
लोक न म्र शास्त्रे यिग्न यथ लम मशामे शर्म (ले) यिग्न मद्र य
थनामसा समु (ले) ययिग्न मद्र यथनामसा मसमम (ले) ॥
यिष्टु समाम गनु य निद्र ॥ ॥ नथेव ॥ य समाना समनया
जीवा जीव प्रमामका शनया ॥ श्री म्रयिकन्यता मर्मिला के सन

६ समा ॥ गृहला के यादि ॥ यग्न यमनू यदा यग्न यमया य
श । यिग्न मद्र यसाथ न विष्णुला के सगकु नि ॥ यथ लम म्र यादि
ययिग्न मद्र यिष्टु समन गनु यमिद्र ॥ ॥ नथेव ॥ य समाना
यग्न व ॥ गृहला के नि ॥ सयिष्टु कनर्वा कु वा नियता यिष्टु म
नुले ॥ यग्न वीन समा यथेव गच्छ वृद्धि यिग्न मद्र + ययोन व
कुलयाता यग्न वृद्धि यिग्न मद्र ॥ यावच्छिदा के ययनी यिष्टु

लाक सिंवांरुव ॥ पूर्वव ॥ संभान गकुं यमिद्व ॥ ॥ स्वर्णि सम
नकुं य धून दाव ॥ दधु विगु पिगु या ॥ गिलाद कादिं वन्दना दि
अदि गुस ॥ वाका ॥ शानादि ॥ स्वर्णि य ॥ पिगु यिता मद्रय पिताम
हसया ॥ अका दना दिं धुय दीय ॥ अतु ॥ अरु गन्धादि ॥ स्व
गसथा ग्लखलूय ॥ दक्षिणीर्त ॥ व्यलु यो याव ॥ लिहा वयाव
कशयूजयाय ॥ यजमान र्थ स्थान गमक ॥ कशयानयाय ॥ द

दिनादि ॥ यजमान निर्मद्यना ॥ लिखीव ॥ ॥ किमिपक यावि
मय ॥ ॥ ॥ दास्यती ॥ कुलमिल ॥ अलन ॥ उं स ॥ दास्य
कु ॥ पिगु वि ॥ धेदवा ॥ ॥ रुफनयुधानमूखो जलधोना ॥ कुया
॥ दीद्यो ॥ द ॥ धन अ ॥ धि ॥ वि ॥ मू ॥ लिपदा निव ॥ ॥ वीवायुश्य
सिदाना ॥ दीद्यो मायुन ॥ वायुया ॥ ॥ दीद्यो मायुन मु ॥ ॥ अलेया ॥ लि
॥ अयाम ॥ ॥ सिनादव ॥ ॥ पर्वम ॥ ॥ सु ॥ ॥ लि ॥ ॥ न ॥ ॥ वा ॥ ॥ द ॥ ॥ म ॥ ॥ क ॥ ॥ न

ॐ नमः शिवाय ॥ शिवाय नमः ॥ शिवाय नमः ॥ शिवाय नमः ॥
॥ लक्ष्मीर्वसतिपुष्पाय ॥ लक्ष्मीर्वसतिपुष्पाय ॥ लक्ष्मीर्वसतिपुष्पाय ॥
॥ गोष्ठ्यो मीमनसादिदा उभ ॥ विश्वदत्तश्च पृथ्वीदद्या ॥
॥ अङ्गनामा सुभयार्णव ॥ आनि युधि धृतिध्वज ॥ युद्धं यज्ञ
वंताक ॥ गद्गदमुसदामम ॥ अङ्गनादिद्या ॥ सोमनसादि
दत्तवा मुविष्टवानु ॥ ॥ देवि ॥ आदत्तमन्नमुदकमेका

यमस्तु ॥ नवविधाननवद्वयः ॥ यथादक कुर्वा विद्वद्व
द्वद्वयः ॥ २३ ॥ लाकोल्लुस्य ॥ यिद्वयितामद्वययितामद्व
नद्वयमनमद्वयकमद्वयमस्तु स्वधा ॥ कामलकुर्वन् ॥ लख
यिद्वद्वयद्वयः ॥ २४ ॥ यथा मुदिद्वयितामद्वयमनमद्वय
मस्तु स्वधा ॥ अद्याना ॥ यित्व ॥ यितामद्वययितामद्वयमन
॥ गिलकुर्वा निधाय ॥ ॥ वंसा ॥ यितामद्वयमन ॥ अस्तु ॥ (गायत्री)

द्वर्गासंवर्द्धगां आयुवावाक्षुमेधश्चलक्ष्मी कुनधनसंगति
सकानवृद्धिबुद्धि ॥ लार्थलक्ष्मी ॥ ॥ यजमानाग्रमधुलक्ष्मी
॥ धावां कुया ॥ ॥ यसाश्च लार्थलक्ष्मी मधुलक्ष्मी लक्ष्मीदाय
क ॥ उंदातावातायिवर्द्धकां वदा ॥ ॥ नक्तिप्रवच ॥ ॥ यद्वि
नामाव्यगमद्वदयचनानुव ॥ ॥ अनुवनावद्वदतिथी ॥ ॥
लक्ष्मीमदि ॥ लक्ष्मीयावितावस्थयास्थितास्माकथं वन ॥ माया

वथस्थयावानावव ॥ ॥ एता नवा सशाशिषः ॥ ॥ द्वियदा
नवपुष्टदानां शक्तिरुव ॥ लार्थलक्ष्मी विद्युमहाय ॥ ॥ लार्
थलक्ष्मी यजमानाग्रमहाय ॥ ॥ यद्विर्मास ॥ ॥ वंशायावमधुलक्ष्मी
सदादलक्ष्मी ॥ ॥ स्वभावावयिष्टावायगा ॥ ॥ हस्तवर्मा विद्यायवि
॥ ॥ यलाव ॥ यालयसावर्क ॥ ॥ यिगुयितामदययितामह ॥ ॥
॥ ॥ हस्तलक्ष्मी विद्युयाववर्मा ॥ ॥ यिगुयितामदययितामह ॥ ॥

पीयूषाक्षयः ॥ विष्णुयादवन न पातयस्यार्थं विहाय
 क॥ अमुस्य धीर्यं शयं ह कृपाल ॥ अदक गद कृमान यय
 नमर्त्त ॥ विनाममं विष्णुस याम्ब स शान कायाव नदि याम्ब विर्य
 ॥ यथदयुषा स ॥ शानकृदावन विनाममद यज्ञायथ ॥ ॥
 विष्णुयाग मीर्द्धावे कृष्ण हासतस्य विष्णुस लोकलूथ ॥ इड
 ईवदमी नमृर्गद्युर्तयय ॥ लीलिय विष्णुर्ग ॥ सुधासुतयययन
 मयिष्टु न ॥ विष्णुयाग कायाय ॥ यनयाग साधनयाद तथा धन

१ विष्णुपितामह उवितामह रसा दकाद्यं अविष्टासि नमः

पाशादकाद्यं उदो यो ह्येकं नमुस्य दम
 कायाव विष्णुस मीर्द्धिलूथ ॥ काठावसर्लिय विहाय ॥ उभानया
 तं कृत्वा ॥ यथायाद्यादद्वि लोदा ॥ विष्णुयदवादि यथा ॥ गी
 न विष्णुनृदो साम्बालिकषाद विष्णुदान कृतयति स्मर्थं यथा
 शब्दादद्वि लोदानं नृय मर्द्धं मयिष्टु ॥ विष्णुस लोकलूथयि
 न ॥ यथा विष्णुयदसंत ॥ लाथलूथं प्रतिधि विदिशि आवाय
 दृशावालिदीकां दद्वि लो विर्य इत्ता ॥ अमुगन्धादि ॥ ॥

॥ अमुगन्धादि ॥

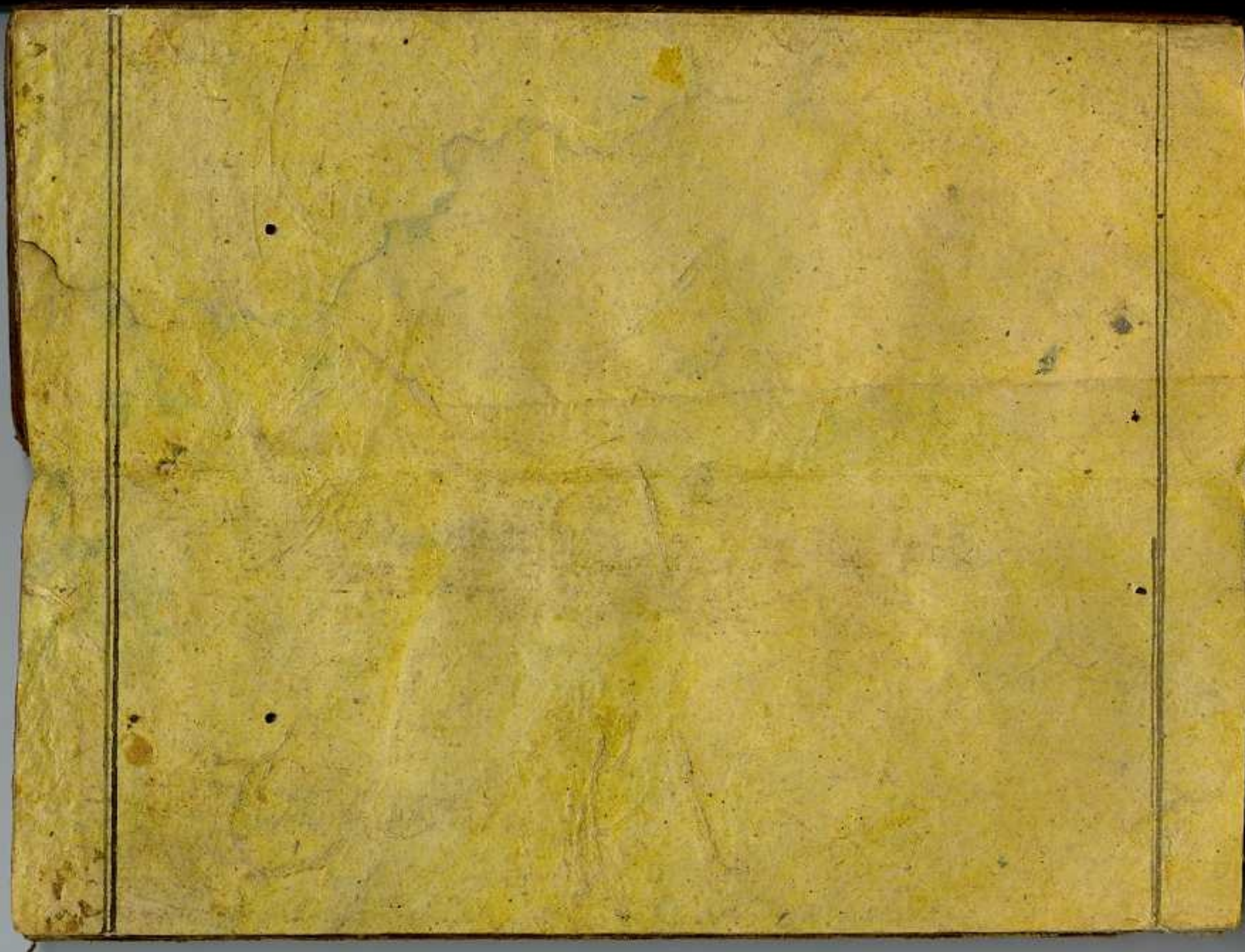
खरुण्ड लख धडाव वावनयावक ॥ ३ ॥ स्वसि कवना कवनी
चमि ॥ गहु लन ॥ यिगु यितामह ययिगाग हा अदीय गृयिष
धा ॥ जामियु धान ॥ हुल सी मगय ॥ ४ ॥ श्रीमवाज श्रवम्यक
नक न मानुनियेव यिगु हा दक मकय ॥ ॥ नीवी यविगु
॥ ० ॥ गमागवाये ॥ वसायाव ॥ उंक यिलादिय ॥ गोसा
गृक ल्या ० ० दमा मनेनम ॥ ॥ नवी मावाहन ॥ अद्य वन्दन
सिधुन ॥ यक्षा यवित यष्य रुलेकाउन ॥ धूपदीय ॥

कयिलादिय ॥ गोसा गृक ॥ ४ ॥ हुलयुष्य गाम्बुल धूपदीय नेवद
॥ नवमानका मयुजय ॥ मलुलयाय सुान हा याव वाय ॥
भुगुय ॥ ० ॥ ॥ गवनमस ॥ ॥ उवन्दि गाविसिधुन ॥ गृकानवव
द गाम्बु ० ० ॥ यिगार्थ वद दिम ॥ अमृत मथनी न्यत्रा मृवकाला
कधाविही ० ० ॥ द गाम्बु गृकालीन वरुम वरुमकम ॥ गवागामा
यथाधर्म गथा सोवृषरुम्यव ॥ हुलामन ० ० ॥ हुल ० ० ॥ किनु

नीमिवय ७॥ उंय रुद्रक १५ वी. १५ चन्दन ॥ गन्धुयमानक १५
 आशीर्वादिविय ॥ आयुर्वर्त विप्लममसुखं शिवाय ॥ अ
 माग्यकामसवसुधातेवकीर्तिनसु ॥ शीनसुधममनितनसु
 पूरयतु ॥ सगानवृद्धिमनवांक्तिनसिद्धिबसु ॥ यज्ञमान
 ॥ सिद्धिबसु क्रियावर्तवृद्धिबसु धनारुध ॥ शक्तिबसु शनीन
 वृ ॥ शान्तिबसु गृहगत ॥ सर्वविद्ययुगाननं सर्वशान्तिवर्त

शुभं । आयुष्युः शिकामशुः लक्ष्मीय विविवर्द्धनं ॥ शुभ
 सध्वं वां धेवाधीनां सर्वदा कल्याणमस्तु ॥ दीर्घमायुः शुभ
 ॥ विष्णुदत्त वैष्णव नृपदत्त । विष्णुयितामस यितामस इति यो सो
 दास्तु ॥ ॐ मित्राणीदीप ॥ ॥ अश्वमेधुर्नृपया ॥ ॐ नृ
 कृत्वाय ॥ ०७ ॥ ॐ विष्णुदत्त ॥ यत्र मायया दत्तं नृपि यत्र
 स्यात्तत्र यादृशं ना ॥ यत्रिष्टथा दत्तं समस्तकर्म शिवा
 ॥ १० मातृमदत्तं मयि मयि मयि ॥ ॥ ॐ नृपि यत्र

यस्माद्विनीयनाकं न तन्निधानादयथापुसङ्गा नष्टा
 न्येष्टा न्येष्टा न्येष्टा ॥ यिनायिनामद (येव नयेव यदित
 महा १॥ द्वापि यया कयि (येन मया दयन नष्टा ॥ यिनायव
 दाहया नृदा (येव यिनामदा १॥ ययिनामदा १॥ यिनाम
 नैयानि लायजय ॥ मनुहीनं कियादानं किकिहीनं (ये
 देव । मय नृमय सय ॥ नमस्कं यिगृधेवता ॥ यमक (गण



विष्णुदत्त मूर्खी दाव यदारुवरु । मनीका नक वीसावक छायाक
॥ नन्दारुदा ६० सादि अलिमसु गी । गोसा सवि मर्कटा ॥ ॥
विष्णु काटावसु छायावर्ग । उमरु वीधादलमव । मृगा १५
। लीजम । गन्ध । वक्रवाक । ४ । नडीय । रुमा १५ नमिमानम ।
मयिजागा । १५ वृक्ष । वाक्कलावदया २ । १५ यस्त्रिगा ३५
मधान १५ ययन आनिधिदनु । एमर्कमिगव । वा । स्वादि

धवागडाध- आश्रितिवनमस्मान्न यत्तु ह्यद्वयवर्त्म ॥ गयार
यितुवृक्ष- स्वयम्भनरुनादेनं । तं ह्यश्रययुष्मन्नीकान् मन्त्र
नसवद्वयः ॥ समीयन्त्यमानेन यिद्विद्योगया क्रिये । उद्व
प्रमथुः (मोक्षो) कलभकारुर्वर्णनं ॥ दुष्पुनः । धनन १३
वो, ध्यावाधवागदाधवः । आत्मानमात्रयिष्यन्ति दद्यायुष
दण्डयनो न ॥ उं कयानन्विता ॥ उं कलासथा ॥ उं अहीवृक्ष

मयीषा ॥ उं सस्मिन्नवन्दुनि ॥ उं ययश्चृथिवाः ॥ उं विष्णुवन्
हमसि ॥ उं अग्निदेवता ॥ उं योऽस्माकि ॥ ० ॥ सखीनध्व
उंकावयाधवेनन ॥ डामलकुशविष्णुलाहानसीवक ॥ वृक्ष
लिश्यालखदायक नदयान ॥ यवास्मन् कलजामा अयुग
अथवान्धवा १॥ तस्यदिश्वदकदयं सक्षीयमयनिरुता ॥
ताहानस्य शिष्याधवेन ॥ आगता दवा यदार्धद्वय

धनत्रा कुरुष्व मे याज्ञाया विपुलं कनकसुवर्णं

विष्णुपात्रस्य सयननयाय ॥ स्वर्णिनं ॥ स्वात्तव्याय ॥ मर्गनं ॥
पवारीनं ॥ ॥ कार्त्तिकेयनं ॥ देवायाथाय सन ॥ लीनवृत्तं ॥ मर्गुनं
रुद्रा ॥ वाक्त्रास हवर्नन ॥ लाथिलुम्बा ॥ अवदानं ॥ स्वर्वाक दार्थ
॥ ॐ आमावाजस्य पुसवाजगमा ॥ धर्म आवायुथिती विष्णुवृथ
॥ आमा गीर्गीयिनना मानना ॥ वामाथासा ॥ अमृगवर्ननगमा ॥
आयुष्यर्जीधर्नविद्या ॥ स्वर्गमाह ॥ सुखानिद ॥ पुयच्छुक्तिरुधाना

ई नृत्तयायापिनामहा ॥ आयुवृद्धिर्यत्तवृद्धिर्वृद्धिः प्रज्ञास
स्वर्णिना ॥ धर्मसिक्तनवृद्धिश्च ॥ सन्नतिश्च सयवृद्धय ॥ विना सु
यीगमसु ॥ ३ ॥ विष्णुदव वैष्णवनवदव सुयीगमसु ॥
धवमी युक्तसीयावर्वमन ॥ स्वर्गावाहानि ॥ गोर्गास्थ सर्वस्था
मकुलमृगा ॥ असीकृता अयुगाश्च ॥ ययवन्मुविहीनकाशम
वर्तु किमायानि ॥ वक्षुदकमेयादद ॥ ॥ गाहाउर्ध्वहाक

लूय वीम ॥ कुश इकायि धुया वसत ॥ नाद्रि दग्धाऽथान्द्रि दग्धा
थवनव विनागकाश न सर्वं नृयि माया कि हृमीदया तिल
क ॥ शक प्रय ॥ क मृदयं मय ॥ मव लखिन लूय काय ॥
मनुलीयि द्वागोव सुयं के स्थानतन ॥ धव २ सगोतन ॥ ॐ
बृदवमाव ॥ सर्वे श्रादय ध्यानम स्मरं ॥ धि धु याव गुरु
न ॥ नदी युवा रुय ॥ धवमिग याव कुशदि बागयाथ

कुश धुली ॥ ॥ श्रिय दग्धा वसा ॥ लिदावया वक्त्रा चन ॥ कु
गायानादि दानं ॥ द्रव्यापिखा श्राय ॥ कोमानीयू शाश्वत ॥ आ
द्वसकाय लादयकं समयन नाहन इवा ॥ ॥ ॐ निवे
दाय वि द्वा प्राना वाकन धविधि श्राद्ध समाक ॥ शुभ ॥

पूर्वाक्रमार्क श्राद्ध अयवाद्रुयि रुकी एकादि विंशमथान श्राद्धवृद्धि याथाकरी

